# उसने कहा था

बड़े-बड़े शहरों से इक्के-गाड़ी बालों की जवान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गयी है और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बम्बुकार्ट वालों की बोली का मरहम लगाएँ। जब बड़े-बड़े शहरों की चौड़ी सड़कों पर घोड़े की पीठ को चाबुक से धुनते हुए, इक्के वाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट सम्बन्ध स्थिर करते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखों के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अंगुलियों के पोरों को चीथकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं, और संसार भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादरी वाले तंग चक्करदार गलियों में, हर एक लड्ढी वाले के लिए ठहरकर सब्र का समुद्र उमड़ाकर 'बचो खालसाजी', 'ठहरना भाई', 'आने दो लालजी', 'हटो बाछा' (बादशाह) कहते हुए सफेद फेंटो, खच्चरों और बत्तखों, गन्ने और खोमचे वालों के जंगल में से राह देखते हैं। क्या मजाल है कि 'जी' और 'साहब' बिना सुने किसी को हठना पड़े। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती ही नहीं, चलती है, पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती हुई। यदि कोई बुढ़िया बार-बार चेतावनी देने पर भी लीक से नहीं हटती, तो उनकी बचनावली के ये नमूने हैं—'हट जा जीणे जोगिये, हट जा करमा वालिये, हट जा पुत्ता प्यारिये, बच जा लम्बी बालिये।' समष्टि में इनके अर्थ है कि तू जीने योग्य है, तू भाग्यों वाली है, पुत्रों की प्यारी है, लम्बी उमर तेरे सामने है, तू क्यों मेरे पहिए के नीचे आना चाहती है?—बच जा।

ऐसे बम्बुकार्ट वालों के बीच में होकर एक लड़का और एक लड़की चौक की दुकान पर आ मिले। उनके बालों और ढीले सुथने से जान पड़ता था कि दोनों सिक्ख हैं। वह अपने मामा के केश धोने के लिये दही लेने आया था और यह रसोई के लिये बड़ियां। दुकानदार एक परदेशी से गुथ रहा था, जो सेर-भर गीले पापड़ों की गड्डी को गिने बिना हटता न था।

'तेरे घर कहाँ है ?''

'मगरे में—और तेरे'

'माँझे में—यहाँ कहाँ रहती है ?''

'अतर सिंह की बैठक में, वे मेरे मामा होते हैं।'

'मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरु बाजार में है।'

इतने में दुकानदार निबटा और इनका सौदा देने लगा। सौदा लेकर दोनों साथ-साथ चले। कुछ दूर जाकर लड़के ने पूछा—'तेरी कुड़माई (मंगनी) हो गयी ?'

इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ाकर 'धत्' कहकर दौड़ गयी और लड़का मुँह देखता रह गया।

दूसरे तीसरे दिन सब्जी वाले के यहाँ, दूध वाले के यहाँ अकस्मात् दोनों मिल जाते। महीना-भर यही हाल रहा। दो-तीन बार लड़के ने फिर पूछा, 'तेरी कुड़माई हो गयी ?' और उत्तर में वही 'धत्' मिला। एक दिन जब फिर लड़के ने वैसे ही हँसी में चिढ़ाने के लिये पूछा तो लड़की, लड़के की सम्भावना के विरुद्ध बोली—

'हाँ हो गयी।'

'कब ?'

'कल, देखते नहीं, यह रेशम का कढ़ा हुआ 'सालू'।'

लड़की भाग गयी। लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में धकेल दिया, एक छाबड़ी वाले की दिन-भर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभी वाले के ठेले में दूध उड़ेल दिया। सामने नहाकर आती हुई किसी वैष्णवी से टकराकर अंधे की उपाधि पायी। तब कहीं घर पहुँचा।

## (2)

'राम राम, यह भी कोई लड़ाई है। दिन रात खन्दकों में बैठे हड्डियाँ

अकड़ गयी। लुधियाना से दस गुना जाड़ा, मेह और बरफ, ऊपर से पिंडलियों तक कीचड़ में धँसे हुए हैं। गनीम कहीं दिखता नहीं—घण्टे दो घण्टे में कान के परदे फाड़ने वाले धमाके के सारी खन्दक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गेबी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगरकोट का जलजला सुना था, यहाँ दिन में पच्चीस जलजले होते हैं। जो कहीं खन्दक से बाहर साफ़ा या कुहनी निकल गयी, तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए हैं या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।'

'लहना सिंह, और तीन दिन हैं। चार तो खन्दक में बिता ही दिए, परसों रिलीफ आ जाएगी, और फिर सात दिन की छुट्टी। अपने हाथों झटका (बकरा मारना) करेंगे और पेट-भर खाकर सो रहेंगे। उसी फिरंगी (फ्रेंच) मेम के बाग में मखमल की सी हरी घास है। फल और दूध की वर्षा कर देती है। लाख कहते हैं, दाम नहीं लेती। कहती है, तुम राजा हो, मेरे मुल्क को बचाने आये हो।'

'चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर न लेटू तो मुझे दरबार साहस की दहलीज पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े-संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं और पेड़ पकड़ने लगते हैं। यों अँधेरे में तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था—चार मील तक एक जर्मन नहीं छोड़ा था। पीछे जनरल साहब ने हट जाने का कमान दिया नहीं तो—

नहीं तो सीधे बर्लिन पहुँच जाते। क्यों? सूबेदार हजारा सिंह ने मुस्कराकर कहा—'लड़ाई के सामने जमादार या नायक के चलाए नहीं चलते। बड़े-बड़े अफसर दूर की सोचते हैं। तीन सौ मील का सामना है। एक तरफ बढ़ गए तो क्या होगा?''

'सूबेदारजी; सच है 'लहना सिंह बोला—'पर करें क्या?' हड्डियों-हड्डियों में तो जाड़ा धँस गया है। सूर्य निकलता नहीं और खाई में दोनों तरफ से चम्बे की बावलियों के-से सोते झर रहे हैं। एक धावा हो जाए, तो गरमी

आ आए।'

'उदमी (उद्यमी) उठ सिगड़ी में कोले डाल। बजीरा, तुम चार जने बाल्टियाँ लेकर खाई का पानी बाहर फेंको। महा सिंह, शाम हो गयी है, खाई के दरवाजे का पहरा बदल दे।' यह कहते हुए सूबेदार सारी खन्दक के चक्कर लगाने लगे।

बजीरा सिंह पलटन का विदूषक था। बाल्टी में गंदला पानी भरकर खाई के बाहर फेंकता हुआ बोला—'मैं पाधा बन गया हूँ। करो जर्मनी के बादशाह का तर्पण।' इस पर सब खिलखिला पड़े और उदासी के बादल फट गए।

लहना सिंह ने दूसरी बाल्टी भरकर उसके हाथ में देकर कहा—'अपनी बाड़ी के खरबूजों में पानी दो। ऐसा खाद का पानी पंजाब-भर में नहीं मिलेगा।'

'हाँ, देश क्या है, स्वर्ग है! मैं तो लड़ाई के बाद सरकार से दस घुमा (जमीनों की नाप) जमीन यहाँ माँग लूँगा और फलों के बूट (पेड़) लगाऊँगा।'

'लारी होरां (स्त्री) को भी यहाँ बुला लोगे? या वहीं दूध पिलाने वाली फिरंगी मेम.....'

'चुप रह। यहाँ वालों को शरम नहीं।'

'देस-देस की चाल है। आज तक मैं उसे समझा न सका कि सिख तम्बाकू नहीं पीते। वह सिगरेट देने में हठ करती है, ओठों में लगाना चाहती है और मैं पीछे हटता हूँ तो समझ लेती है कि राजा बुरा मान गया, अब मेरे मुल्क के लिये लड़ेगा नहीं।'

'अच्छा, अब बोधा सिंह कैसा है?'

'अच्छा है।'

'जैसे मैं जानता ही न होऊँ। रात-भर तुम अपने दोनों कम्बल उसे उढ़ाते हो और आप सिगड़ी के सहारे गुजर करते हो। उसके पहरे पर आप पहरा दे आते हो। अपने सूखे लकड़ी के तख्तों पर उसे सुलाते हो, आप कीचड़ में पड़े रहते हो। कहीं तुम न माँदे पड़ जाना। जाड़ा क्या है मौत है और निमोनिया

से मरने वालों को मुरब्बे (नई नहरों के पास वर्गभूमि) नहीं मिला करते।'

'मेरा डर मत करो। मैं तो बुलेल की खड्ड के किनारे मरूँगा। भाई कीरत सिंह की गोद में मेरा सिर होगा और मेरे हाथ के लगाये हुए आँगन के आम के पेड़ की छाया होगी।'

बजीरा सिंह ने त्यौरी चढ़ाकर कहा—'क्या मरने-मारने की बात लगाई है? मरें जर्मनी और तुरक। हाँ भाइयों, कैसे—

**दिल्ली शहर तैं पिशौर नुं जांदिए,**
**कर लेणा लोगां दा बपार मडिए,**
**कर लेणा नाड़े दा सौदा अड़िए,**
**ओय लाणा चटाका कदुए नुं।**
**कद्दू बणया वे मजेदार गोरिये,**
**हुण लाणा चटाका कदुए नुं॥**

*(अरी दिल्ली शहर से पेशावर को जाने वाली, लोगों का व्यापार कर ले और इजार बंद का सौदा कर ले। जीभ चटचटाकर कद्दू खाती है। गोरी! कद्दू मजेदार बना है। अब चटचटाकर उसे खाना है।)*

कौन जानता था कि दाढ़ियों वाले घर-बारी सिख ऐसा लुच्चों का गीत गाएँगे, पर सारी खन्दक इस गीत से गूँज उठी और सिपाही फिर ताजे हो गए, मानो चार दिन से सोते और मौज ही करते हों।

## (3)

दो पहर रात गयी। अंधेरा है। सन्नाटा छाया हुआ है। बोधा सिंह खाली बिस्कुटों के तीन टीनों पर अपने दोनों कंबल बिछाकर और लहना सिंह के दो कंबल और एक बरानकोट (ओवरकोट) ओढ़कर सो रहा है। लहना सिंह पहरे पर खड़ा हुआ है। एक आँख खाई के मुँह पर है और एक बोधा सिंह के दुबले शरीर पर। बोधा सिंह कराहा।

'क्यों बोधा, भाई क्या है?'

'पानी पिला दो।'

लहना सिंह ने कटोरा उसके मुँह से लगाकर पूछा—'कहो कैसे हो?'

पानी पीकर बोधा बोला—'कंपनी (कंपकपी) छूट रही है, रोम-रोम में तार दौड़ रहे हैं। दाँत बज रहे हैं।'

'अच्छा, मेरी जरसी पहन लो।'

'और तुम।'

'मेरे पास सिगड़ी है और मुझे गरमी भी लगती है, पसीना आ रहा है।'

'ना, मैं नहीं पहनता, चार दिन से तुम मेरे लिए.....'

'हाँ, याद आई। मेरे पास दूसरी गरम जरसी है। आज सबेरे ही आई है। विलायत से मेमें बुन-बुनकर भेज रही हैं। गुरु उनका भला करें।' यों कहकर लहना अपना कोट उतारकर जरसी उतारने लगा।

'सच कहते हो।'

'और नहीं झूठ?' यों कहकर नाहीं करते बोधा को उसने जबरदस्ती जरसी पहना दी और आप खाकी कोट और जीन का कुरता-भर पहनकर पहरे पर आ खड़ा हुआ। मेम की जरसी की कथा केवल कथा थी।

आधा घंटा बीता। इतने में खाई के मुँह से आवाज आई—'सूबेदार हजारा सिंह।'

'कौन लपटन साहब? हुकुम हुजूर।' कहकर सूबेदार तनकर फौजी सलाम करके सामने हुआ।

'देखो, इसी समय धावा करना होगा। मील भर की दूरी पर पूरब के कौने में एक जर्मन खाई है। उसमें पचास से ज्यादा जर्मन नहीं हैं। इन पेड़ों के नीचे-नीचे दो खेत काटकर रास्ता है। तीन-चार घुमाव है। जहाँ मोड़ है वहाँ पन्द्रह जवान खड़े कर आया हूँ। तुम यहाँ दस आदमी छोड़कर सबको साथ ले उनसे जा मिलो। खंदक छीनकर वहीं, जब तक दूसरा हुक्म न मिले, डटे रहो। हम यहाँ रहेगा।'

'जो हुक्म।'

चुपचाप सब तैयार हो गए। बोधा भी कंबल उतारकर चलने लगा। तब लहना सिंह ने उसे रोका। लहना सिंह आगे हुआ तो बोधा के बाप सूबेदार ने उँगली से बोधा की ओर इशारा किया। लहना सिंह समझ कर चुप हो गया। पीछे दस आदमी कौन रहें, इस पर बड़ी हुज्जत हुई। कोई रहना न चाहता था, समझा-बुझाकर सूबेदार ने मार्च किया। लपटन साहब लहना की सिगड़ी के पास मुँह फेरकर खड़े हो गए और जेब से सिगरेट निकालकर सुलगाने लगे। दस मिनट बाद उन्होंने लहना की ओर हाथ बढ़ाकर कहा—'लो तुम भी पियो।'

आँख मारते-मारते लहना सिंह सब समझ गया। मुँह का भाव छिपाकर बोला—'लाओ साहब।' हाथ आगे करते ही उसने सिगड़ी के उजाले में साहब का मुँह देखा, बाल देखे, तब उसका माथा ठनका। लपटन साहब के पट्टियों वाले बाल एक दिन में कहाँ उड़ गए और उनकी जगह कैंचियों से कटे हुए बाल कहाँ से आ गए?

शायद साहब शराब पिये हुए हैं और उन्हें बाल कटवाने का मौका मिल गया है। लहना सिंह ने जाँचना चाहा। लपटन साहब पाँच वर्ष से उसकी रेजिमेंट में थे।

'क्यों साहब, हम लोग हिन्दुस्तान कब जाएँगे।'

'लड़ाई खत्म होने पर। क्यों, क्या यह देश पसंद नहीं?'

नहीं साहब, शिकार के वे मजे यहाँ कहाँ? याद है, पार साल नकली लड़ाई के पीछे हम और आप जगाधरी जिले में शिकार करने गये थे—हाँ-हाँ, वहीं जब आप खोते (गधे) पर सवार थे और आपका खानसामा अब्दुल्ला रास्ते के एक मंदिर में जल चढ़ाने को रह गया था? 'बेशक पाजी कहीं का'—सामने से वह नील गाय निकली कि ऐसी बड़ी मैंने कभी न देखी थी। और आपकी एक गोली कंधे में लगी और पुट्ठे में निकली। ऐसे अफसर के साथ शिकार खेलने में मजा है। क्यों साहब, शिमले से तैयार होकर उस नील गाय का सिर आ गया था न? आपने कहा था कि रेजिमेंट की मैस में लगाएँगे। 'हाँ,

पर मैंने वह विलायत भेज दिया'—ऐसे बड़े-बड़े सींग दो-दो फुट के तो होंगे?

'हाँ लहना सिंह, दो फुट चार इंच के थे। तुमने सिगरेट नहीं पिया?'

'पीता हूँ साहब, दियासलाई ले आता हूँ।' कहकर लहना सिंह खंदक में घुसा। अब उसे संदेह नहीं रहा था। उसने झटपट निश्चय कर लिया कि क्या करना चाहिए।

अंधेरे में किसी सोने वाले से वह टकराया।

'कौन। बजीरा सिंह?'

'हाँ, क्यों लहना? क्या कयामत आ गयी? जरा तो आँख लगने दी होती?'

**(५)**

'होश में आओ। कयामत आई है और लपटन साहब की बरदी पहनकर आई है।'

'क्या?'

'लपटन साहब या तो मारे गए हैं या कैद हो गए हैं। उनकी बरदी पहनकर यह कोई जर्मन आया है। सूबेदार ने इसका मुँह नहीं देखा, मैंने देखा है और बातें की हैं। सोहरा (सुसरा) साफ उर्दू बोलता है; पर किताबी उर्दू और मुझे पीने को सिगरेट दिया है।'

'तो अब?'

'अब मारे गए। धोखा है। सूबेदार होरां (जी) कीचड़ में चक्कर काटते फिरेंगे और यहाँ खाई पर धावा होगा। उधर उन पर खुले में धावा होगा। उठो एक काम करो। पलटन के पैरों के निशान देखते-देखते दौड़ जाओ। अभी बहुत दूर न गये होंगे। सूबेदार से कहो कि एकदम लौट आएँ। खंदक की बात झूठ है। चले जाओ, खंदक के पीछे से निकल जाओ। पत्ता तक न खुड़के। देर मत करो।'

'हुक्म तो यह है कि यहीं.....'

'ऐसी तैसी हुक्म की। मेरा हुकुम—जमादार लहना सिंह, जो इस समय यहाँ सबसे बड़ा अफसर है, उसका हुकुम है, मैं लपटन साहब की खबर लेता हूँ। पर यहाँ तुम आठ ही हो?'

'आठ नहीं, दस लाख। एक-एक अकालिया सिख सवा लाख के बराबर होता है। चले जाओ।'

लौटकर खांई के मुहाने पर लहना सिंह दीवार से चिपक गया। उसने देखा कि लपटन साहब ने जेब से बेल के बराबर तीन गोले निकाले। तीनों को जगह-जगह खंदक की दीवारों में घुसेड़ दिया और तीनों में एक तार-सा बाँध दिया। तार के आगे सूत की एक गुत्थी थी, जिसे सिगड़ी के पास रखा। बाहर की तरफ जाकर एक दियासलाई जलाकर गुत्थी पर रखते....बिजली की तरह दोनों हाथों से उल्टी बंदूक को उठाकर लहना सिंह ने साहब की कुहनी पर तानकर दे मारा। धमाके के साथ साहब के हाथ से दियासलाई गिर पड़ी। लहना सिंह ने एक कुन्दा साहब की गरदन पर मारा और साहब 'आह माइ गाड' (हाय मेरे राम) कहते हुए चित्त हो गए। लहना सिंह ने तीनों गोले बीनकर खंदक के बाहर फेंके और साहब को घसीटकर सिगड़ी के पास लिटाया। जेबों की तलाशी ली। तीन-चार लिफाफे और एक डायरी निकाल कर उन्हें अपनी जेब के हवाले किया।

साहब की मुर्छा हटी। लहना सिंह हँसकर बोला—'क्यों लपटन साहब, मिजाज कैसा है? आज मैंने बहुत बातें सीखीं। यह सीखा कि सिख सिगरेट पीते हैं। यह सीखा कि जगाधरी जिले में नील गायें होती हैं और उनके दो फुट चार इंच के सींग होते हैं। यह सीखा कि मुसलमान खानसामा मूर्तियों पर जल चढ़ाते हैं और लपटन साहब खोते पर चढ़ते हैं। पर यह तो कहो ऐसी साफ उर्दू कहाँ से सीख आए? हमारे लपटन साहब तो बिना 'डेम' के पाँच लफ्ज भी नहीं बोला करते थे।'

लहना ने पतलूनों की जेबों की तलाशी नहीं ली थी। साहब ने मानो जाड़े से बचने के लिए दोनों हाथ जेबों में डाले।

लहना सिंह कहता गया—'चालाक तो बड़े हो पर मांझे का लहना इतने बरस लपटन साहब के साथ रहा है। उसे चकमा देने के लिए चार आँखें चाहिए। तीन महीने हुए एक तुरकी मौलवी मेरे गाँव में आया था। औरतों को बच्चे होने की ताबीज बाँटता था और बच्चों को दवाई देता था। चौधरी के बड़ के नीचे मंजा (खाट) बिछाकर हुक्का पीता रहता था और कहता था जर्मनी वाले बड़े पंडित हैं। वेद पढ़-पढ़कर उसमें से विमान चलाने की विद्या जान गए हैं। गौ को नहीं मारते, हिन्दुस्तान में आ जाएँगे तो गौ-हत्या बंद कर देंगे। मंडी के बनियों को बहकाता था कि डाकखाने से रुपया निकाल लो, सरकार का राज्य आने वाला है। डाक बाबू पोल्हूराम भी डर गया था। मैंने मुल्लाजी की दाढ़ी मूड़ दी थी और गाँव से बाहर निकालकर कहा था कि जो मेरे गाँव में अब पैर रखा तो.....।'

साहब की जेब में से पिस्तौल चला और लहना की जाँघ में गोली लगी। इधर लहना की हैनरी मार्टिनी के दो फायरों ने साहब की कपाल-क्रिया कर दी। धमाका सुनकर सब दौड़ आए।

बोधा चिल्लाया—'क्या है?'

लहना सिंह ने उसे यह कहकर सुला दिया कि एक हड़का हुआ कुत्ता आया था, मार दिया और औरों से सब हाल कह दिया। सब बंदूकें लेकर तैयार हो गए। लहना ने साफा फाड़कर घाव के दोनों तरफ पट्टियाँ कसकर बाँधी। घाव माँस में ही था। पट्टियों के कसने से लहू निकलना बंद हो गया। इतने में सत्तर जर्मन चिल्लाकर खाई में घुस पड़े। सिखों की बंदूकों की बाढ़ ने पहले धावे को रोका, दूसरे को रोका, पर यहाँ थे आठ। (लहना सिंह तक-तककर मार रहा था—वह खड़ा था और, और लेटे हुए थे।) और वे सत्तर। अपने मुरदा भाइयों के शरीर पर चढ़कर जर्मन आगे घुसे आते थे। घोड़े से मिनटों में वे....

अचानक आवाज आई, 'वाह गुरुजी की फतह! वाह गुरुजी का खालसा!' और धड़ाधड़ बंदूकों के फायर जर्मनों की पीठ पर पड़ने लगे। ऐन मौके पर जर्मन दो चक्की के पाटों के बीच आ गए। पीछे से सूबेदार हजारा

सिंह के जवान आग बरसाते थे और सामने लहना सिंह के साथियों के संगीन चल रहे थे। पास आने पर पीछे वालों ने भी संगीन पिरोना शुरू कर दिया। एक किलकारी और—'अकाल सिक्खां दी फौज आई! वाह गुरुजी की फतह! वा गुरुजी दा खालसा! सत-श्री अकाल पुरुष!!' और लड़ाई खत्म हो गयी। तिरसठ जर्मन या तो खेत रहे थे या कराह रहे थे। सिक्खों में पन्द्रह के प्राण गए। सूबेदार के दाहिने कंधे में से गोली आरपार निकल गयी। लहना सिंह की पसली में एक गोली लगी। उसने घाव को खंदक की गीली मिट्टी से पूर लिया और बाकी को साफा कसकर कमरबंद की तरह लपेट लिया। किसी को खबर न हुई कि लहना को दूसरा घाव—भारी घाव—लगा है। लड़ाई के समय चाँद निकल आया था—ऐसा चाँद, जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है। और हवा ऐसी चल रही थी जैसे वाणभट्ट की भाषा में 'दन्तवाणेपदेशाचार्य' कहलाती है। बजीरा सिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा-दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार, लहना सिंह से सारा हाल सुन और कागजात पाकर वे उसकी तुरत बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

इस लड़ाई की आवाज तीन मील दाहिनी ओर की खाई वालों ने सुन ली थी। उन्होंने पीछे टेलीफोन कर दिया था। वहाँ से झटपट दो डाक्टर और दो बीमार ढोने की गाड़ियाँ चलीं, जो कोई डेढ़ घंटे के अंदर-अंदर आ पहुँची। फील्ड--अस्पताल नजदीक था। सुबह होते-होते वहाँ पहुँच जाएँगे, इसलिए मामूली पट्टी बाँधकर एक गाड़ी में घायल लिटाये गये और दूसरी में लाशें रखी गयीं। सूबेदार ने लहना सिंह की जाँघ में पट्टी बँधवानी चाही, पर उसने यह कहकर टाल दिया कि थोड़ा घाव है, सबेरे देखा जाएगा। बोधा सिंह ज्वर में बर्रा रहा था। वह गाड़ी में लिटाया गया। लहना को छोड़कर सूबेदार जाते नहीं थे। यह देखकर लहना ने कहा—'तुम्हें बोधा की कसम है और सूबेदारनीजी की सौगंध है, जो इस गाड़ी में न चले जाओ।'

'और तुम?'

'मेरे लिए वहाँ पहुँचकर गाड़ी भेज देना और जर्मन मुरदों के लिए भी तो गाड़ियाँ आती होंगी। मेरा हाल बुरा नहीं है। देखते नहीं मैं खड़ा हूँ। बजीरा सिंह मेरे पास है ही।'

'अच्छा पर.....'

'बोधा गाड़ी पर लेट गया, भला आप भी चढ़ जाओ। सुनियेजी, सूबेदारनी होरां को चिट्ठी लिखो, तो मेरा मत्था टेकना लिख देना। और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उसने कहा था, वह मैंने कर दिया।'

गाड़ियाँ चल पड़ी थीं। सूबेदार ने चढ़ते-चढ़ते लहना का हाथ पकड़कर कहा—'तुमने मेरे और बोधा के प्राण बचाये हैं। लिखना कैसा? साथ ही घर चलेंगे। अपनी सूबेदारनी को तू ही कह देना। उसने क्या कहा था?'

'अब आप गाड़ी पर चढ़ जाओ। मैंने जो कहा, वह लिख देना और कह भी देना।'

गाड़ी के जाते ही लहना लेट गया—'बजीरा, पानी पिला दे और मेरा कमरबंद खोल दे, तर हो रहा है।'

## (5)

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म-भर की घटनाएँ एक-एक करके सामने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं, समय की धुंध बिल्कुल उन पर से हट जाती है।

लहना सिंह बारह वर्ष का है। अमृतसर में मामा के यहाँ आया हुआ है। दही वाले के यहाँ, सब्जी वाले के यहाँ, हर कहीं, उसे एक आठ वर्ष की लड़की मिल जाती है। जब वह पूछता है—'तेरी कुड़माई हो गयी?' तब 'धत्' कहकर वह भाग जाती है। एक दिन उसने वैसा ही पूछा तो उसने कहा—'हाँ, कल हो गयी, देखते नहीं यह रेशम के फूलों वाला सालू?' सुनते ही लहना सिंह को दुःख हुआ। क्रोध आया। क्यों हुआ?

'बजीरा सिंह, पानी पिला दे।'

पच्चीस वर्ष बीत गए। अब लहना सिंह नं. 77 राइफल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान ही न रहा। न मालूम वह कभी मिली थी या नहीं। सात दिन की छुट्टी लेकर जमीन के मुकदमे की पैरवी करने वह अपने घर आया। वहाँ रेजिमेंट के अफसर की चिट्ठी मिली कि फौज लाम पर जाती है, फौरन चले आओ। साथ ही सूबेदार हजारा सिंह की चिट्ठी मिली कि मैं और बोधा सिंह भी लाम पर जाते हैं, लौटते हुए हमारे घर होते जाना, साथ हो चलेंगे। सूबेदार का गाँव रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था। लहना सिंह सूबेदार के यहाँ पहुँचा।

जब चलने लगे तब सूबेदार बेढ़े (जनाने) में से निकलकर आया। बोला—'लहना, सूबेदारनी तुमको जानती है, बुलाती है, जा मिल आ।' लहना सिंह भीतर पहुँचा। सूबेदारनी मुझे जानती हैं। कब से? रेजिमेंट के क्वार्टरों में तो कभी सूबेदार के घर के लोग रहे नहीं। दरवाजे पर जाकर 'मत्था टेकना' कहा। असीस सुनी। लहना सिंह चुप।

'मुझे पहचाना?'

'नहीं।'

'तेरी कुड़माई हो गयी—धत्—कल हो गयी—देखते नहीं, रेशमी बूटों वाला सालू—अमृतसर में.....'

भावों की टकराहट से मूर्छा खुली। करवट बदली। पसली का घाव बह निकला।

'बजीरा पानी पिला'—उसने कहा था।

स्वप्न चल रहा है, सूबेदारनी कह रही है—'मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ, मेरे तो भाग फूट गये। सरकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है, आज नमकहलाली का मौका आया है। पर सरकार ने हम तीमियों (स्त्रियों) की एक घघरिया पलटन क्यों न बना दी, जो मैं भी सूबेदारजी के साथ चली जाती? एक बेटा है। फौज में भरती हुए उसे एक ही बरस हुआ। उसके पीछे चार और हुए, पर एक भी नहीं जिया,

सूबेदारनी रोने लगी। 'अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन टांगे वाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। आप घोड़ों की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है, तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।'

रोती-रोती सूबेदारनी ओवरी (अंदर के घर) में चली गयी। लहना भी आँसू पोंछता हुआ बाहर आया।

'बजीरा सिंह पानी पिला'—उसने कहा था।

लहना का सिर अपनी गोद में रखे बजीरा सिंह बैठा है। जब माँगता है, तब पानी पिला देता है। आधे घंटे तक चुप रहा, फिर बोला—'कौन है? कीरत सिंह?'

बजीरा ने कुछ समझकर कहा—'हाँ।'

'भइया, मुझे और ऊँचा कर ले। अपने पट्ट (जाँघ) पर मेरा सिर रख ले।' बजीरा ने वैसा ही किया।

'हाँ अब ठीक है। पानी पिला दे। बस, अब के हाड़ (आषाढ़) में यह आम खूब फलेगा। चाचा भतीजा दोनों यहीं बैठकर आम खाना। जितना बड़ा तेरा भतीजा है, उतना ही यह आम है। जिस महीने उसका जन्म हुआ था उसी महीने मैंने इसे लगाया था।'

बजीरा सिंह के आँसू टप-टप टपक रहे थे।

x x x

कुछ दिन पीछे लोगों ने अखबारों में पढ़ा—फ्रांस और बेल्जियम—68वीं सूची—मैदान में घावों से मरा—नं. 77 सिख राइफल्स, जमादार लहना सिंह।

●